SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

आधुनिक युग में अंधविश्वास व कु–प्रथा से पीड़ित, भारतीय नारी

सुरेखा जवादे, (Ph.D.), हिंदी विभाग
सेंट थॉमस महाविद्यालय, रूआबांधा, भिलाई, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

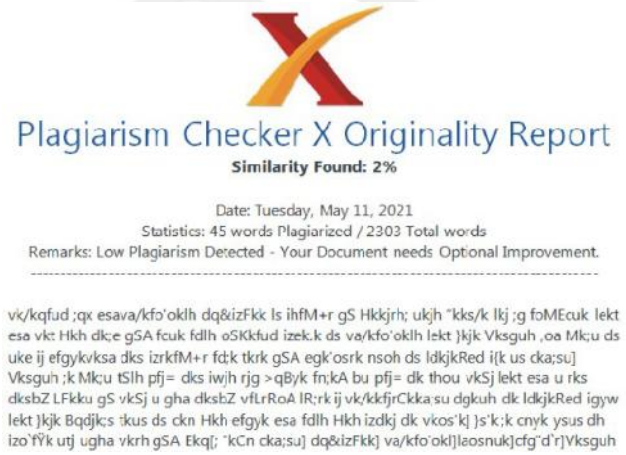

Corresponding Author
सुरेखा जवादे, (Ph.D.), हिंदी विभाग
सेंट थॉमस महाविद्यालय, रूआबांधा,
भिलाई, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 11/05/2021
Revised on : -----
Accepted on : 18/05/2021
Plagiarism : 02% on 11/05/2021

शोध सार

यह विडम्बना समाज में आज भी कायम है। बिना किसी वैज्ञानिक प्रमाण के अंधविश्वासी समाज द्वारा टोहनी एवं डायन के नाम पर महिलाओं को प्रताड़ित किया जाता है। महाश्वेता देवी के सकारात्मक पक्ष ने बांयेन, टोहनी या डायन जैसी चरित्र को पूरी तरह झुठला दिया। इन चरित्र का जीवन और समाज में न तो कोई स्थान है और न हीं कोई अस्तित्व। सत्यता पर आधारित बांयेन कहानी का सकारात्मक पहलू समाज द्वारा ठुकराये जाने के बाद भी महिला में किसी भी प्रकार का आवेश, द्वेष या बदला लेने की प्रवृत्ति नजर नहीं आती है।

मुख्य शब्द

बांयेन, कु–प्रथा, अंधविश्वास, संवेदना, बहिष्कृत, टोहनी.

महाश्वेता देवी की लेखन शैली की विशेषता है कि समाज के उपेक्षित वर्ग की पीड़ा को कहानियों में समाहित करती है। लेख में व्याप्त अंधविश्वास कु–प्रथाओं को अपनी सशक्त कलम के माध्यम से कहानी के रूप में लिखा है। उनके द्वारा इन कहानियों के माध्यम से सामाजिक चेतना जागृत कर समाज को कु–प्रथाओं से उभारने का प्रयास किया गया है।उनके द्वारा रचित यह रचना केवल कहानी ही नहीं सत्य सी प्रतीत होती है। इस कहानी की प्रासंगिकता आज भी कायम है जिसकी झलक छत्तीसगढ़ राज्य में आज भी दिखाई देती है।

लेखिका ने बांयेन कहानी के माध्यम से बताना चाहा है कि एक ग्रामीण महिला चण्डी एक परिवार तक सीमित है। उस परिवार में वह माँ एवं एक पत्नी की भूमिका का निर्वाहन ईमानदारी पूर्वक कर रही थी, परन्तु समाज द्वारा रातों–रात एक सामान्य महिला को कु–प्रथाओं एवं अंधविश्वास के चश्में से देखते हुए चण्डी को बांयेन (डायन) बना दिया जाता है। इस कु–प्रथा के चलते एक

माँ को उसके पुत्र से एक पत्नी को पति से दूर कर दिया जाता हैं। छल–छदम करने वाले इस समाज को माँ की ममता तक दिखलायी नहीं पड़ती है।

बांयेन का चरित्र आम आदमी से हटकर होता है। जिस प्रकार से उसे समाज में बांयेन के संबंध में बताया था कि वह बहुत ही खतरनाक होती है, मरे हुए बच्चे के शव को जमीन के नीचे से खोद कर निकालती है और उसकी दृष्टि आदमी, पेड़ या जानवर पर पड़ जाये तो वहीं मर जाते है। बायेन का पुत्र भागीरथ सोचता है ऐसे में बांयेन किसी बच्चों को कैसे जन्म दे सकती है? ये सारे सवाल उसके मन–मस्तिष्क में लगातार घूम रहे थे उसे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। वह सोच रहा था कि एक माँ व महिला बांयेन कैसे बन सकती है?

सभी गांव वालों को मालूम था कि भगीरथ ही चण्डी बांयेन का पुत्र है, इसलिए भगीरथ की पूरे गांव में अच्छी पूछ–परख थी और सभी लोग उसे प्यार देते थे। जो मांगता था उसे आसानी से मिलता था। किन्तु यह सब कुछ हर डोम प्रजाति के बच्चे के साथ नहीं होता। बांयेन पुत्र होने के कारण ही भगीरथ के साथ अच्छा व्यवहार किया जा रहा था, क्योंकि गाँव वालो को डर था कि यदि बांयेन के पुत्र को सताया गया तो बांयेन उसके बच्चों के साथ दुर्व्यवहार कर सकती है।

चण्डी को बांयेन बनाने की तीव्र इच्छा संजोये समाज के ठेकेदार बार–बार उसे बांयेन के नाम से सम्बोधित कर रहे थे, किन्तु दुखी महिला ने कभी भी बांयेन शब्द को स्वीकार नहीं किया। जबरदस्ती बांयेन बनाने के लिए आतुर समाज उसे प्रेरित कर रहा था कि वह बांयेन ही है, लेकिन चण्डी यह बांयेन नाम मानने को तैयार नहीं थी। तभी इस भीड़ में से एक व्यक्ति उसके पति को भी बुला लाता है। स्थल पर पति को देख दर्द से अविभूत चण्डी कहती है कि मैं बांयेन नहीं हूँ, मुझे आरोपित करने वाले अंधविश्वासी लोगों को समझाइये, आप तो सब कुछ जानते हो कि मैं सामान्य महिला हूँ। पति मलिन्दर पत्नी चण्डी की पुकार के बाद मौका पाकर उसे देखता रहता है लेकिन वह तय नहीं कर पाता है कि उसकी पत्नी बांयेन है या चण्डी! और कुछ ही क्षण बाद वह भी समाज के बहकावे में आकर चण्डी का बांयेन होना स्वीकार कर लेता है।

भगीरथ के मन में अपने माँ से मिलने की तीव्र इच्छा जागृत होती है। पिता की अस्वीकृति व समाज में फैली भ्रांतियों के बाद भी भगीरथ अपनी माँ की ममता पाने व मिलने गांव के बाहर बनी झोपड़ी के पास पहुंच जाता है। समाज के ठेकेदारों ने चण्डी का बहिष्कार कर उसे गाँव के बाहर निकाल दिया था। भगीरथ सहज ही बात करते हुए माँ से कहता है कि माँ तुम नये कपड़े पहनोगी। अपनी पुत्र की बातों को सुनकर चण्डी बांयेन अपने आपको नहीं रोक पाती। जबरदस्ती थोपे गये बांयेन के चरित्र से भयभीत होकर अपने पुत्र से कहती है मैं बांयेन हूँ, मुझसे दूर रहो। माँ की ममता से वंचित बच्चा दूर न जाने की हठ करते हुए कहता है कि मैं आपसे नहीं आपकी छाया से बात कर रहा हूँ। यह सुनने के बाद भी उसकी माँ को विश्वास नहीं होता है। पुत्र को अंजाने में भी नुकसान न हो, इस बात का भय उसे सताता है और वह कहती है कि उसकी छाया को देखना व बात करना गलत है। भगीरथ कहता है कि मुझे इन सब बातों से डर नहीं लगता है, फिर भी उसकी माँ उसे लगातार घर जाने के लिए प्रेरित करती है।

लेखिका कहती है, कामकाजी महिला चण्डी डोम जिसे समाज के ही कुछ अंधविश्वासी लोगों द्वारा बांयेन बनाया गया था, इन्हीं में से कुछ डकैतों ने ट्रेन को लूटने के नियत से पटरियों पर बांस का पहाड़ बना दिया था। रेल पटरियों के किनारे गाँव से भगाई गई चण्डी रहती थी। डकैतो की ट्रेन को लूटने के नियत देखकर चण्डी उसी ओर दौड़ पड़ती है। अंधेरे में लालटेन की रोशनी पर चण्डी को देख डकैत भाग खडे होते है। ये वही लोग है जिन्होंने सामान्य महिला को बांयेन बनाया था। इस भयानक अंधेरो को चिरते हुए डायन की आवाज डकैतो को पुकरती है। क्या कर रहे हो? गाड़ी को गिराना चाहते हो। चण्डी को चिन्ता खाये जा रही थी, इस बांस के पहाड़ से टकराकर ट्रेन दुर्घटनाग्रस्त हो जायेगी और कई बेकसुरों की जान चले जायेगी। ट्रेन के बांस के पहाड़ से टकरा जाने की घटना को लेकर सामान्य महिला से बांयेन बनी चण्डी सोच रही थी, लेकिन एक बांयेन के मन में यह सवाल कैसे उठ रहे थे? उसे लग रहा था इस सर्वनाश को रोक पाना संभव नहीं है, लेकिन इस समाज से ही बने डकैत खुद

के लाभ के लिए कितने ही बेकसुरों का जीवन छीन लेते हैं। इन्हीं लोगों ने एक सीधी–साधी पारिवारिक महिला को भूत–प्रेत वाली बांयेन बना दिया। ढ़ोल की आवाज से पूरे गाँव में चण्डी के बांयेन होने की घोषणा कर दी थी और वही चण्डी आज ट्रेन मे सवार बेकसुरों की जान बचाने के लिए परेशान थी।

वह सोचती है कि अगर सचमुच ही वह बांयेन है तो उस मुसीबत की घड़ी में बांयेन के साथ में रहने वाले भूत–प्रेत क्यों नहीं आ रहे? यही भूत–प्रेत ही ट्रेन को क्यों नहीं रोक लेते? बार–बार यह सवाल उसके ह्रदय में उठ रहे थे और स्वयं में कोई भी हल नहीं निकल रहा था। समाज द्वारा सताये जिस उपदेश को लेकर उसे बहिष्कृत किया गया था। वह लांछन भी अब इस मुसीबत की घड़ी में काम नहीं आ रहा था। समाज केवल आरोपित कर रहा था। चण्डी का एक ही लक्ष्य था किसी तरह वह रेलगाड़ी को पटरी पर डाकुओं द्वारा बनाये टीले से टकराने से रोक सके। इसलिए लालटेन को हाथ में उठाकर चण्डी रेलपटरी पर ही अपने प्राणों की चिन्ता किये बगैर, तेजी से दौड़ने लगी और पूरी ताकत से चिल्लाकर दूसरा हाथ हिला–हिला कर ट्रेन को रोकने का असफल प्रयास कर रही थी। उसके मन की तीव्र इच्छा थी कि किसी तरह ट्रेन रूक जाये। पटरी पर बने बांस के पहाड़नुमा टीले से टकराने के पहले ही रूक जाये।

पटरियों पर दनदनाते हुए दौड़ती ट्रेन को रोकने की कोशिश में चण्डी के सारे प्रयास असफल हो चुके थे। लेकिन ट्रेन को रोकने की कोशिश में चण्डी पटरियों पर ही दौड़ती रहीं। एक पल ऐसा आया कि ट्रेन चण्डी पर चढ़ने के बाद ही रूकी। तब तक चण्डी के प्राण निकल चुके थे। समाज से अपने माथे पर बांयेन का लांछन लिए बहिष्कृत समाज की सताई हुई, असहाय निर्बला एक सामान्य महिला ने अपने प्राण कि आहुति देकर कई बेकसुरों का जीवन बचा लिया। ट्रेन डकैती के पटरी पर बनाये बांस के टीले से टकराती तो न जाने कितने ही रेल पर सवार लोग मौत को गले लगाते। चण्डी ने अपने प्राण देकर ट्रेन को दुर्घटना से बचाने का प्रयास किया। सरकार तक भी इस महान कार्य की जानकारी हुई। समाज व सरकार दोनों ही सोचने पर मजबूर थे कि भूत–प्रेतों की साथी सामान्य महिला से समाज द्वारा बनाई गई बांयेन लोगों की जान कैसे बचा सकती है?

चण्डी द्वारा मानव हित में किये गये इस कार्य पर पुलिस के दरोगा ने गाँव में आकर डोम प्रजाति के लोगो को बताया कि तुम लोगो की कहानी मुझे मालुम है लेकिन चण्डी ने साहस का काम किया है। सरकार से लेकर प्रत्येक व्यक्ति जिसने भी सुना चण्डी की तारीफ करता रहा। चण्डी को सम्मानित करने के लिए शासन ने अफसर भेजा है क्योंकि वो तुम लोगों की प्रजाति की थी। चण्डी के इस कार्य को जानने के बाद चण्डी को समाज से बहिष्कृत करने वाले सभी लोगों को इस अपराध का बोध हो रहा था। इस कृत के कारण सबकी नजरे झुक गई थी। किसी एक ने हिम्मत करके स्वीकार किया कि वह हमारे ही बिरादरी की थी। तभी चण्डी पुत्र भगीरथ आश्चर्य चकित होकर उसकी माँ को समाज से निकालने वालो को देखने लगा क्योंकि इन्हीं लोगों ने उसकी माँ को समाज से और अपनी जाति से निकाल दिया था। भगीरथ की माँ ने अपने प्राण त्याग कर कई लोगों को नया जीवन दिया था। चण्डी द्वारा किये गये महान कार्य के आगे पूरा समाज स्वयं गर्व महसूस कर रहा था। चण्डी को निकालने वाले समाज ने कर्म प्रधान चण्डी को स्वीकार कर लिया, परन्तु चण्डी को बांयेन, डायन अथवा टोहनी जैसे लांछन को धोने के लिए स्वयं के प्राणों की आहुति देनी पड़ी।

परन्तु भगीरथ कहीं न कहीं दुखी था कि उसकी माँ की इसी समाज ने उपेक्षा की थी, इसलिए वह दरोगा व सरकारी कर्मचारी के समक्ष कहता है कि पूरे समाज को सरकार सम्मानित नहीं करेगी, यह मैडल रूपी सम्मान को पाने का मैं ही अधिकारी हूँ। तभी सरकारी अफसर उनसे पूछते है कि यह दावा करने वाला बालक तुम कौन हो? इस पर पूरी ताकत व पूरे गर्व के साथ कहता है कि चण्डी उसकी माँ थी। सकारात्मक पक्ष जीवन एवं समाज के परिवर्तनशीलता का भाव है। इसके माध्यम से ऊर्जा, जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा एवं भविष्य निर्माण के लिए व्यक्ति दृढ.संकल्पित होता है। महाश्वेता देवी की कहानियों के मुख्य पात्रों में बांयेन की चण्डी ने ट्रेन दुर्घटना को बचाकर डायन कु–प्रथा को समाप्त करने की सकारात्मक चेतना जागृत की।

निष्कर्ष

आधुनिक युग में भी यह कु–प्रथा स्थापित है बिना किसी प्रमाण के अंधविश्वासी समाज द्वारा टोहनी एवं डायन के नाम पर महिलाओं को प्रताड़ित किया जाता है। महाश्वेता देवी के सकारात्मक पक्ष बांयेन, टोहनी या डायन जैसी चरित्र को पूरी तरह झुठला दिया। इन चरित्र का जीवन और समाज में न तो कोई स्थान है और न हीं कोई अस्तित्व। बांयेन कहानी का सकारात्मक पहलू समाज द्वारा ठुकराये जाने के बाद भी पात्र चण्डी में किसी भी प्रकार का आवेश, द्वेश या बदला लेने की प्रवृत्ति नजर नहीं आती है। पूर्णतः समाज के प्रति समर्पित महिला द्वारा अपने प्राणों की आहूति देकर भी सैकड़ों हजारों लोगों का जीवन बचा लेती है। चण्डी के इस महान कृत ने बांयेन बनाने वाले निर्लज्ज समाज को शर्मसार कर दिया। मर कर भी चण्डी समाज को यह संदेश देने में सफल रही कि एक नारी जो किसी की पत्नी, माँ होती हैं वह कभी भी डायन या टोहनी नहीं बन सकती।

अंधविश्वास एवं कु–प्रथाओं के संदेह के आधार पर महिलाओं को डाकन, डायन, डाकिनी घोषित कर दिया जाता हैं। प्रतिवर्ष हजारों महिलाओं की बिना किसी ठोस प्रमाण के हत्या कर दी जाती हैं। उनकी कहानियों के विषय समाज को सच से सामना कराकर शोषक और शोषित दोनों ही वर्ग को अंधविश्वास एवं कु–प्रथाओं की मिथ्या से बाहर लाकर सामान्य जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है। समाज की खामियों को उजागर करने के साथ उसमें सुधार के लिए किये गये जाने वाले आवश्यक कार्य को दिशा दिखाकर चेतना जागृत करती है। असम मेघालय की सीमावर्ती ठाकुर किला क्षेत्र की रहने वाली 62 वर्ष की बिरूबाला महिला के प्रयास से 20 अगस्त 2015 को डायन निषेध कानून बना है। इसे असम विधान सभा में पारित किया गया है। डायन प्रताड़ना को संज्ञे अपराध माना है और डायन निषेध कानून के तहत अपराधी को तीन से पांच वर्ष का कारावास तथा पचास हजार से पांच लाख रूपये तक का जुर्माना दिया जाने का प्रावधान है। अन्य राज्य जैसे राजस्थान की विधान सभा में भी विधेयक पारित कर डायन प्रताड़ना निवारण कानून बनाया गया है, जिससे की ग्रामीण आदिवासी महिलाओं को सुरक्षा मिल सके।

छत्तीसगढ़ राज्य में सामाजिक बुराईयों में सबसे बड़ी चुनौती टोहनी प्रथा है। छत्तीसगढ़ प्रदेश में किसी भी महिला को टोहनी कहकर प्रताड़ित किया जाता है। इसी सामाजिक बुराई के खिलाफ प्रदेश सरकार के द्वारा छत्तीसगढ़ विधान सभा में 19 जुलाई 2005 को टोहनी प्रथा उन्मूलन विधेयक 2005 पारित किया गया। इस टोहनी उन्मूलन कानून के तहत किसी भी महिला को टोहनी प्रताड़ना देने वाले व्यक्ति को 5 से 10 वर्ष तक की सजा का प्रावधान है, और हत्या करने की स्थिति में भारतीय दण्ड विधान की धारा 304 के तहत हत्या का मुकदमा चलाया जाता है। अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष डॉ. दिनेश मिश्र द्वारा सूचना के अधिकार अधिनियम के तहत छत्तीसगढ़ शासन से जानकारी मांगी गई थी, जिस पर पुलिस विभाग द्वारा जानकारी दी गई कि वर्ष 2006 से वर्ष 2017 तक इन 11 वर्षो में छत्तीसगढ़ प्रदेश में 1357 महिलाएँ टोहनी के संदेह में प्रताड़ित की गई। उनकी समिति के द्वारा सरकार से टोहनी प्रताड़ना के मामले में दोषियों को जल्द से जल्द सजा मिले, इसके लिए फास्ट ट्रेक कोर्ट में सुनवायी की जाये, साथ ही प्रताड़ित महिलाओं को मुआवजा व पुर्नवास के लिए शासन स्तर पर योजना बनाने की मांग की गई है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, बह्मदत्त,(1958) *हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन,* सरस्वती प्रकाशन सदन, आगरा।
2. अवस्थी, देवी, शंकर,(1973) *नई कहानियाँः संदर्भ और प्रकृति,* राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. माहेश्वर, (1993) *महाश्वेता देवी की श्रेष्ठ कहानियां,* नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।
4. देवी, महाश्वेता, (2003) *भारतवर्ष तथा अन्य कहानियाँ,* आधार प्रकाशन, हरियाणा।
5. डब्लू.डब्लू.डब्लू.आईबीसी24.इन

****